भड्लाई शिक्खा

(भद्रवाही सीखो)

BHADLAI SHIKKHA

卐

लेखक :-

माधोलाल पाधा (उपाध्याय)

भद्रवाही

भद्लाई शिक्खा

(भद्रवाही सीखो)

BHADLAI SHIKKHA

लेखक :—
माधोलाल पाधा (उपाध्याय)
भद्रवाही

मुद्रक ! चांद प्रैस, गुमट गेट जम्मू ।

प्रकाशन तिथि 5 अक्तूबर 1971

प्रकाशक :—

भड्लाई संस्था भद्रवाह

मिलने का पता :—

1. जय गोपाल गुप्ता ऐण्ड सन्ज़
भद्रवाह ।

2. सत पाल गुप्ता ऐण्ड सन्ज़
भद्रवाह ।
जे० ऐण्ड के० स्टेट

प्रथम बार संख्या 1000

मूल्य सवा दो रुपये

इस पुस्तक के प्रकाशन में लेखक जम्मू व कश्मीर कल्चरल अकाडमी से मिली सहायता के लिए आभार प्रदर्शित करता है और लेखन तथा प्रकाशन की त्रुटियों आदि का स्वयं जिम्मेदार है ।

विषय-सूची

दो शब्द कई बातें

"भद्‌लाई शिक्खा" भद्रवाही भाषा में छपने वाली अपनी किस्म की पहली पुस्तक है जो चिरकाल से अनुभूत कमी को दूर करने का सराहनीय प्रयास है। भद्रवाही भाषा का नाम पश्चिमी पहाड़ी क्षेत्र की सभी बोलियों में से सर्वोपरि है।

डॉ० ग्रियर्सन महोदय ने भद्रवाही को एक स्वतन्त्र भाषा माना है। डॉ० महोदय की धारणा है कि भद्रवाही की उप-बोलियां भलेसी और पाडरी हैं। भद्रवाही भाषा का चम्बियाली और पंगवाली से भी गहरा सम्बन्ध है।

जम्मू प्रांत की भाषा डोगरी के बाद भद्रवाही ही ऐसी भाषा है जो अधिक बोली और समझी जाती है।

इस संकलन की सामग्री में अनुभवी लेखक ने बड़ी खोज पूर्ण जानकारी देने की कोशिश की है। भद्रवाही वर्णों के विषय में प्राचीन प्रचलित पद्धति का उल्लेख किया है जिस से ज्ञात होता है कि पहिले भद्रवाही पढ़ने और सीखने की परम्परा प्रचलित थी।

पद्म श्री डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा जी के शब्दों में "भद्रवाही का व्याकरण कई कारणों से प्राकृत से भी पुराना है। इसके वही शब्द उपलब्ध होते हैं जो केवल वेदों में ही उपलब्ध होते हैं।"

इस पुस्तक में लेखक ने दैनिक जीवन से सम्बन्धित बातों को बड़े रोचक ढग से प्रस्तुत किया है। जहां सचित्र पुस्तक आकर्षण का कारण बनेगी वहां जीवनोपयोगी सरल भद्रवाही को

भी सिखाने और सीखने में सरलता होगी।

भद्रवाह के प्रसिद्ध स्थानों के बारे में जानकारी "एक पंथ दो काज" का काम देगी। कवितां और शिक्षाप्रद पाठ इस पुस्तक की रोचकता और आकर्षण को चार चांद लगाते हैं।

राष्ट्र भावना के विचारों का प्रसार तो इसकी महानता को और भी बढ़ाता है। भाषा और शैली, मार्मिक, सरल प्रवाह पूर्व और मौलिक है।

वास्तव में भद्रवाही भाषा के भावी प्रचार और प्रसार के लिए यह पुस्तक एक नींव के पत्थर का कांम देगी।

भद्रवाही जनता व्यक्तिगत रूप से इनकी इस तेजस्वी तपस्या से तपकर अनवरत प्रायस से भद्रवाही भाषा को जन-साधारण तक लाने के लिए उत्सुक रहेगी।

भावी अनुसधान और वैयाकर्णिक खोजों के लिए भी यह संदर्भ का काम दे सकती है।

लेखक श्री माधो लाल जी पाधा ने समग्र पर्वतीय बोलियों के अनुसंधान को ओर प्रेरित किया है तथा अपनी मातृ भाषा को जीवत रखने का प्रयास किया है। यह प्रयास सदैव मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखने योग्य है।

मैं आज गर्व से कह सकता हूं कि यह भद्रवाही सीखने की पुस्तक भी है और भद्रवाही भी एक भाषा है।

अत: मैं लेखक को अपनी तरफ से भड्लाई सस्था को ओर से तथा भाषा पारिखयों की ओर से श्री माधो लाल जी पाधा (लेखक) को हर्दिक बधाई देता हूं। अपने ऊपर और भद्रवाही

भाषियों तथा राष्ट्र प्रेमियों पर आप का एक स्तुत्य और प्रशंस्नीय उपकार मानता हूं।

आशा है कि श्री पाधा जी अपनी ओजास्वनी लेखनी से अपने प्रौढ़ एवं संतुलित अनुभव से आगामी वर्षों में भी हमारा उपकार करेंगे।

दिनांक
हिराई जाट्ल
चिन्ता भद्रवाह।

विनीत
बाल कृष्ण चौहान
भद्रवाही
मन्त्री भड्लाई संस्था
भद्रवाह

निवेदन

भद्रवाणी अर्थात् भद्रवाही भाषा संस्कृत की एक सुशील पुत्री है परन्तु सहस्रों वर्ष अलग-थलग रहने के कारण इसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन होना स्वभाविक ही है।

भद्रवाह तथा उसके आस-पास यह भाषा प्राचीन काल से अधुनिक काल तक खूब प्रचलित है। इससे हमारे पूर्वजों को अत्यन्त स्नेह था। इसी लिये उन्होंने अपने समय में इस के विकास के लिए भारी श्रम किए।

वह प्राचीन भद्रकाशी के ही नहीं अपितु चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के राजाओं के भी गुरू थे।

वह केवल ज्योतिषी ही नहीं परन्तु स्वयं ही उनके लिए वर्षिक पत्रिकाओं के निर्माता भी थे। लेखक का भी उसी वंश से सीधा सम्बन्ध है।

इस दशा में—संकलन की सामग्री की ओर, मेरा यह प्रथम प्रयास है। जिसकी वर्षों से मांग थी परन्तु उसकी पूर्ति का सूत्रपात बहुत देर से हो रहा है।

मेरा यह उद्देश्य है कि जहां बालक, युवा, और बृद्ध सभी आयु के प्राणीमात्र के लिये उपयोगी सद्भावों, सच्चाई और मानवता से प्रेम, और देश भक्ति तथा ज्ञान का प्रसार हो वहां अधिक से अधिक लोग भद्रवाही भाषा से परिचित होकर गुप्त अनमोल रत्न-धन विद्या को प्राप्त करें।

लेखक के कई वर्षों का घोर श्रम और खोज तथा अपने

पूर्वजों द्वारा विरचित भद्रवाही में "विवाह पद्धति" तथा उनसे प्राप्त ज्ञान पर्याप्त सहायक सिद्ध हुआ है।

स्वर्गीय पं० गौरी शंकर जी कृत भद्रवाहो भाषा में श्री "मद्भगवद्गीता" के पद्य अनुवाद से भी प्रयाप्त सहायता मिली है। जिसके लिए उनका लेखक आभारी है।

अब मैं भड्लाई सदस्यों विशेषकर श्री बाल कृष्ण जी चौहान, श्री मुरली धर दत्त प्रधान भड्लाई संस्था, श्री उदय चंद जी वाईस प्रिंसिपल गो० कालेज भद्रवाह, श्री जी० सी० भारद्वाज जी प्रो० संस्कृत गो० कालेज भद्रवाह और श्री कृष्ण लाल गुप्ता टीचर हायर सैकेंडरी स्कूल भद्रवाह और श्री देस राज जी काटल तथा उन सब का जिन से परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहायता मिली है, आभारी हूं।

आशा है कि सभी वर्गों के लोग अपनी सहानुभूति प्रदान कर कृतार्थ करेंगे तथा त्रुटियों-भूलों को बताकर और उचित सुझाव देकर अनुगृहीत करेंगे।

भेजा भद्रवाह (जम्मू व कश्मीर) विनीत

तिथि :—भाद्रपद माधो लाल पाधा (उपाध्याय)

प्र० ९ सं० २०२७ वि० भद्रवाही

उपमन्त्री भड्लाई संस्था

भद्रवाह

वर्णमाला

स्वर

अ अ (अद्वा)	आ (ऐतवा)	इ (इन्दरोइ)	ई (ईइरोई)
उ (उपलउ)	ऊ (उपलभाऊ)	ऋ (रेणोरि)	ॠ (रीखोरी)
ऌ (लीग्रोलि)	ॡ (लीसोली)	ए (किरालोइ)	ऐ (कपटोई)
ओ (ऊठग्रो)	औ (अष्टयी	अं (बन्देम्)	अः (दुबिन्दः)

वर्णमाला

व्यञ्जन

क (कोम्रोका)	ख (खन्नूखा)	ग (गेगडूगा)	घ (घेसीघा)	ङ (नारंगणां)
च (चाटोच)	छ (छतनीछा)	ज (जेयोजा)	झ (झेषीझा)	ञ खनुपटिनियां
ट (अमंण्टा)	ठ (समंण्ठा)	ड (डेडुडा)	ढ (कलीढा)	ण (नन्कोटिणा)
त (ततोता)	थ (थेलीथा)	द (ददोदा)	ध (धनकोधा)	न (नस्तोना)
प (पेंडरुपा)	फ (फुरीफा)	ब (बेबूबा)	भ (भायोभा)	म (माम्रोमा)

वर्णमाला

व्यंजन

य (यावया)	र (रक्कोरा)	ल (लाग्रोला)	व (वग्रोवा)	श (शशुशा)
ष (षाग्रोषा)	स (सस्सूसा)	ह (हालोहा)	क्ष (क्+ष)	त्र (त्+र)

ज्ञ (ज्+ञ)	ट्ल (ट्+ल)	ड्ल (ड्+ल)	ढ्ल (ढ्+ल)

और नीचे बिन्दु वाले व्यञ्जन :—

च़	छ़	ज़	झ़	ड़	ढ़

वर्णवाला

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

ए ऐ ओ औ अं अः

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

❀ट्ल ड्ल द्ल❀

च़ छ़ ज़ झ़ ड़ ढ़

❀विशुद्ध भद्रवाही ध्वनियां जो वैदकि भाषा की ध्वनियों से मेल खाती हैं।

पाठ–१

पिछान्ने जो अक्षर

अ इ क स ल ट्ल न ट र ड्ल ऋ अं
द स ह छ म ग छ़ ऊ ऌ त्त प घ ज्ञ त्र
भ च अः च़ ज़ उ य ॡ ढ्ल झ ई झ
ख ज फ व भ ङ द ड इ ए र ल श
र त ज्ञ आ थ न ष ई क ख ध ढ्ल म
उ ह ञ ॡ ढ ज ऊ ड अः य क त्र अं
ड्ल ब न ष ल प इ त म ग ह ञ ऐ
ॡ ब भ न म त्र द र ड़ ॠ ढ़ ब ट्ल
औ ए ठ झ़ ई त्त र ड ए क ल ष स
ह न ध द ख ब य उ च फ आ अः ट
प झ़ व न ण त प र स ग म द न ह

पाठ–२

सुखते सुखते शब्द

अक्=एक, रस=रस, ऊट=ऊंट, सप्=सांप, नक्=नाक, नल=नल, गल=गला, बात, अग्=आग, ज़ट=अनपढ़, टर=बक्वास, च़ल=चलना, नत=ब्रत से पहिला दिवस्, झ़ल= तेज आग की आंच, कांटों वाला झाड़, लत=लात, मझ़=बीच, कमर बंध, थन=थन, पल=पल, बत=रास्ता, च़ट=चाटो, सभ=सब, छ़ड=छोड़ो, खट=चारपाई या कमाना, फट फट=आवाज, टर टर=व्यर्थ बातें, बह्=चलो या मारो, घर=घर, पर=पर, नह्=नाखून, ऋण=ऋण, भर=भरो, लज़=लज्जा, फल=फल, बन=जंगलात, जश=यश, कष=मधु मक्खी का छत्ता, खैंचना।

अग् न छ़ड।—आग न छोड़। खट ट्लट।—चारपाई को छड़ी से झाड़। ज़ट न बन।—अनपढ़ मत बन। टर टर न रट।—बक्वास न कर। मझ़ एई।—बीच में आ। इन उन छ़ड।—बहाना मत कर। लत न बह्।—लात मत मार, नत रख।—ब्रत से एक दिन पहिले उपवास कर। झ़ल छ़ड।—तेज आग की आंच छोड़। बत मझ़ रख।—बीच में रास्ता रख। रस च़ख।—रस चखो। नह् कट।—नाखून काट, नाखून काटने का यन्त्र। लज़ रख।—लाज रख। फल च़ख।—फल चखो।

पाठ—३

धख् असुखते शब्द

अमन=शान्ति, भरन्=भरें, मरन्=मृत्यु, पढ़न्=पढ़ें, चण्ड=थप्पड़, छ्ंप=छत के किनारे, ढकन=ढकना, छ्तन्=छत दें, पकन्=पकाएं, फण्ड=साफ करना या धुनना, दंत=दान्त, ज़हर=विष ।

अमन रख।—शाण्ति रख। सभ अन्न भरन्।—सब अन्न भरें। जहर न छ्ड।—जहर न छोड़। भजन भज।—भजन कर। सभ पढ़न्।—सब पढ़ें। चुन्ड न बाह।—थप्पड़ मत मार। उन्न फन्ड।—ऊन धुन। छ्ंप बंध।—छत बांध। छ्ंप छ्ड।—छत का किनारा छोड़ दे। ढकन रख।—ढकना रख। सभ घर छ्तन्।—सब घर पर छत डालें। अस् घर छ्डम्।—हम घर छोड़ दें। इह नच्न अे।—यह एक नाचने वाली जड़ी बूटी है। नच्न।—एक जड़ी बूटी जिस के खाने से मनुष्य नाचता रहता है।

पाठ–४

धख् असुखते असुखते शब्द

अढ़ बढ़=अड़ना, खड़ खड़=खड़ एक आवाज़, झन झन=बहुत बक्वास, छन छन=छन छन, मल मल=मल मल, खट खट=खट खट की आवाज़, पट पट=जवानी, पड़ पड़=बुड़ बुड़ाना, लर लर=व्यर्थ जोर जोर से बातें करना, झड़ झड़=तेज़ अग्नि जलने की आवाज़, चौंध, नट खट=नट खट, झल झल=खूब ज़ोर से या ज़ार ज़ार, फड़ फड़=फड़फड़ाना, सर पट=सर पट, झट पट=झट पट, ज़र ज़र=ज़ोर से चलने की ध्वनि।

अढ़ बढ़ न कर्।—मत अड़। खड़ खड़ कर्।—खड़ खड़ की आवाज़ कर। कन्न झन झन कर्त ए।=कान शांय शांय करता है। छन छन बज़ए।=छन छन बजे। मलमल आहन्।=मलमल लाओ। नट खट न बन।=नट खट न बन। झट पट चल।=झट पट चल। खट खट कर्।=खट खट कर। पट पट ज़ओ।=जवानी बता। पड़ पड़ न कर्।=न बुड़बड़ा। लर लर न कर्।=व्यर्थ ज़ोर ज़ोर से बातें न कर।

पाठ—५

मात्राई

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
	ा	ि	ी	ु	ू
	(वही)	(मात्रा)	(अमांत्रा)	(खोरु)	(अर्खोरु)
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
े	ै	ो	ौ	ं	ः
(हुंजां)	(हुँजोर)	(अशड़े)	(अशड़ेभि)	(बिन्दु)	(दुबिन्दः)

क	का	कि	की	कु
(काओका)	(वहीका)	(मात्राकि)	(अर्मात्राकी)	(खोरेकु)
कू	के	कै	को	कौ
(अर्खोरेकू)	(हुँजेके)	(हुँजोरकै)	(अशड़ेको)	(अशड़ायभिकौ)

कं	कः
(बिन्दकं)	(दुबिन्देकः)

इसी तरह आगे भी पढ़िए:—

ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः

ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	प	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फ	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः

पाठ–६

मात्रा प्रयोग

अज़ अम्बर साफ अे।—आज आसमान साफ है।

धुप भी तेज़ अे।—धूप भी तेज है।

बिश्श आराम केर्।—बैठो आराम करो।

आंहां ठंडी ठंडी बाऊ भो चलने लगी।—अहा ठन्डी ठन्डी वायु भी चलने लगी।

पौथी ट्ला त पढ़। पुस्तक पकड़ो और पढ़ो।

इह अक् चाक अे।—यह एक चाक है।

पैंसिल ऊरां रख।—पैंसिल उधर रख।

कलमी सैईं लिख।—कलम से लिखो।

काकले पुढ़ लिख।—कागज पर लिखो।

पहले धूड़* पट्टे पुढ़ लिख।—पहिले धूड़ पट्टा पर लिखो।

हथ्थे सैईं रेति पुढ़ लिख।—हाथ से रेत पर लिखो।

पिटेरी पुढ़ छैल लिख।—तख्ती पर सुन्दर लिखो।

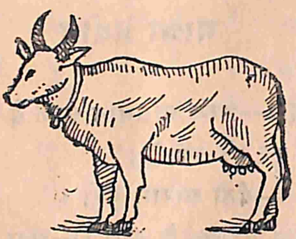
पिटारी गंदी मत रख।—तख्ती को गन्दा मत रखो।

सदाई देहने हथ्थे सैंई लिखां केर्।—सदा दाहिने हाथ से लिखा करो।

---

*धूड़ पट्टा ऐसी तख्ती होती है जिसपर पहिले मिट्टी महीन पीस कर ठीक बिछा कर उंगली से लिखा जाता है।

पाठ–७



बच्छी

इह मेरी बच्छी ग्रे ।—यह मेरी गाय है ।
ऐसारु नँव शारी ग्रे ।—इस का नाम शारी है ।
ट्लिकालां भुई ।—शाम हुई ।
मेरी बच्छी दौड़तां घरे ग्राई ।—मेरी गाय दौड़कर घर आई ।
घास खाव ।—घास खाया ।
दुध दितु ।—दूध दिया ।
शारी बड़ी छैल बच्छी ग्रे ।—शारी बड़ी सुन्दर गाय है ।

*ग्रपनी बच्छी मीं ट्लारी ,
नंव एसारु ग्राहे शारी ।
दुध देचे रोज़ बेचारी ,
खातम् ग्रस् बेरी बेरी ।

---

*मुझे ग्रपनी गाय प्यारी है ,
नाम इस का शारी है ।
रोज़ बेचारी दूध देती है ,
हम बारी बारी खाते हैं ।

पाठ—८

अनमोल वाक्य

हत्थ छैल चारे धो।— हाथ अच्छी तरह धो।

फिरी भत्त, दाल त रोट्टि मज़े सैईं खा।—फिर पक्के चावल, दाल और रोटी आनंद से खाओ।

चैंपी चैंपी खा।—चबा चबा कर खाओ।

चूर चूर केर्तां खा।—चूर चूर करके खाओ।

हर समे खेईतां कुलुली केर्।—हर समय खाकर कुल्लो करो।

हत्थ धो चूढी केर्।—हाथ धो मुंह साफ करो।

दन्त साफ केर्।—दांत साफ करो।

बीड़ी सैईं दन्त साफ केर्।—दातुन से दांत साफ करो।

बुर्श सैईं दन्त साफ केर्।—बुर्श से दांत साफ करो।

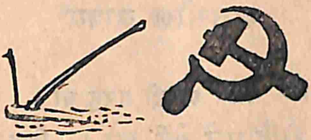
एंचे रे अपनी सेहत बधा।—इस तरह अपनी सेहत को बढ़ाओ।

सेहत बड़ू धन अे।—सेहत बड़ा धन है।

शुद्धतारो बड़ो ध्यान रख।—सफाई का विशेष ध्यान रखा करो।

सदाई शुद्धताई सैईं प्रेम केर्।—सदैव ही सफाई से प्रेम किया करो।

पाठ–६



हल ट्ला

भ़ुलतां न रह ।—सो कर न रह ।

खड़ो उठ ।—खड़ा उठ ।

मड़द बन—पुरुष बन ।

हल, गेंती, हथ्थोड़ो त ड्लाती ट्ला ।—हल, गेंती हथ्थोड़ा और दरान्ती पकड़ ।

हिम्मत केर् ।—हिम्मत करो ।

आलस छड़ ।— सुस्ती छोड़ो ।

हौसलो रख दिल न ट्लोड़ ।—हौंसला रखो दिल न तोड़ो ।

*अपने कम्मे मा दिले सेंईं लग ,
तां लाए परमेश्वर तेरी जिंदी सग ।
अक् मेरी गल ऐ याद रख ,
भलू भोए तेरु सेरी उमरी सभ ।

---

*अपने काम में दिल से लग जा,
तब परमेश्वर तेरे जीवन को सींचेगा ।
यह एक बात मेरी याद रखो,
आयु भर तुम्हारा भला होगा ।

पाठ–१०



पौथो या किताब

पौथी जो किताब भी ज़ोतन् ।—पौथी को किताब भी कहते हैं ।

इह किसेरी पौथी श्रे ।—यह किस की पौथी है ।

इह मेरी पौथी श्रे जी ।—यह मेरी पौथो है जी ।

मेरी पौथारो रंग हैड्लो श्रे ।—मेरी पौथी का रंग पीला हैं ।

ऐस् पौथो मा छैल छैल चित्र श्राहन् ।—इस पुस्तक में सुन्दर सुन्दर चित्र हैं ।

श्रंऊ श्रपनी पौथी रोज़ पढ़तां ।—मैं श्रपनी पुस्तक रोज पढ़ता हूं ।

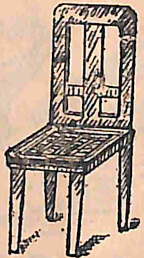
सेभ्भी बच्चन् एपनी एपनी पौथी ट्लरी भोचन् ।—सब बच्चों को श्रपनी श्रपनी पुस्तकें प्यारी होती हैं ।

मीं तां श्रपने पौथो बड़ो ट्लारी श्रे ।—मुझे तो श्रपनी पुस्तक बड़ी प्यारी है ।

श्रंऊ श्रपनी पौथी छैल चारे संभतां ताके मा रखतां ।—मैं श्रपनी पुस्तक को अच्छी तरह संभाल कर श्रलमारी में रखता हूँ ।

किताबां केरे लै घरे ताक रखोरे भोतन् ।—किताबों के लिए घर में श्रलमारियां बनी होती हैं ।

पाठ–११



कुरसी

इन कुण ग्रे ?——यह क्या है ?

इह ग्रक् कुर्सी ग्रे ।——यह एक कुर्सी है ।

कुरसी लोंहेरी त काठेरी बनोरी ग्रे ।——कुर्सी लोहे ग्रौर लकड़ी की बनी हुई है ।

कुरसी चऊर ज़ंगां भोचन् ।——कुर्सी की चार टांगें होती हैं ।

इह कुरसी मेरे बव्वे पंचेई रुपैईएं घिन्नोरी थी ।—यह कुर्सी मेरे पिता जी ने पच्चीस रुपये में खरीदी थी ।

ग्रंऊ कुरसी पुढ़ रोज़ बिशतां ——मैं रोज कुर्सी पर बैठता हूँ ।

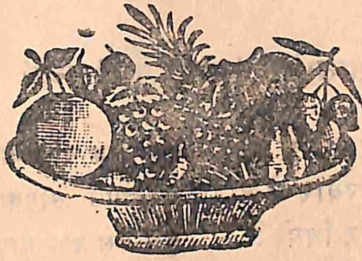
इह कुरसी बड़ी छैल ग्रे ।——यह कुर्सी बड़ी सुन्दर है ।

गरीबन् कुरसी न जुढ़न् ।——गरीबों को कुरसियां नहीं मिलती हैं ।

ग्रम्बीर कुरसन् पुढ़ बिशतां खातन् पीतन् ।—— धनवान् लोग कुरसियों पर बैठ कर खाते हैं ।

ग्रजकाल कुरसारो बड़ो रिवाज़ ग्रे ।—— ग्राज कल कुर्सी का वड़ा रिवाज़ है ।

पाठ—१२



शागां या सेब्ज़ो

शागां या सेब्ज़ो खूब उगाथ।	शाक या सब्जियां खूब उगाओ।
सेब्ज़ी जादे खाथ।	सब्जियां ज्यादा खाओ।
खेरी सेब्ज़ी खाथ।	अच्छी सब्जियां खाओ।
सेब्ज़ी खेईतां सेहत बधाथ।	सब्जियां खाकर सेहत बढ़ाओ।
सेब्ज़ी सेस्ती त गुणकेरी भोचन्।	सब्जियां सस्ती और गुणकारी होती हैं।
रित्तो भिड्लाहे बड़ी सेब्ज़ी भोचन्।	बरसात में भद्रवाह बड़ी सब्जियां होती हैं।
रित्ती इड़ो बड़ां बयन्त शागां भोतन्।	बरसात में यहां असंख्य सब्जियां होती हैं।
तेनकेरां नंवां ज़ोतम्।	उनके नाम यह हैं:—
पालक, केव्ली, भठठे, रोंघां केरी शैइयां, बंड्ज़ौ, कड़म, करल्ले, टमाटर, मूलो, गुग्लो, किसरोड़, पिपली इत्यादि।	पालक, आलू, बैंगन, राजमाह की फलियां, फफरु, कड़म्, किरहला, टमाटर, मूली, शलजम, लाल मिरच, किसरोड़ इत्यादि।

पाठ–१३

सप्ताहेरी दिहेड़ी केरां नव्वां

सुबोध—अज़ कुण बार अे जी ?	सु०—आज़ क्या वार है जी ?
प्रबोध—अज़ चन्दरबार अे जी।	प्र०—आल सोमवार है जी।
सु०—हीज कुण बार थियो ?	सु०—कल क्या वार था ?
प्र०—हीज ऐतबार थियो।	प्र०—कल ऐतवार वारथा।
सु०—कालां कुण बार भोलो ?	सु०—कल क्या वार होगा ?
प्र०—कालां मंगल बार भोलो।	प्र०—कल मंगलवार होगा।
सु०—परेज़ कुण बार थियो ?	सु०—परसों क्या वार था ?
प्र०—परेज़ शैंचर बार थियो।	प्र०—परसों शनिवार था।
सु०—ट्रैलदी कुण वार भोलो।	सु०—परसों क्या वार होगा।
प्र०—ट्लती बुधवार भोलो।	प्र०—परसों बुधवार होगा।
सु०—उरेज़ कोह वार थियो।	सु०—चौथ क्या वार था ?
प्र०—उरेज़ शुक्रवार थियो।	प्र०—चौथ शुक्रवार वार था।
सु०—चौथे कुण वार भोलो ?	सु०—चौथ क्या वार होगा ?
प्र०—चौथे ब्रस्त वार भोलो ?	प्र०—चौथ बृहस्पति वार होगा।

पाठ–१४



घोड़ो

हेरा जी इह् अक् घोड़ो अ्रे ।	देखो जी यह एक घोड़ा है ।
इह् लाल रंगेरो घोड़ो अ्रे ।	यह लाल रंग का घोड़ा है ।
बड़ो मोटो ताज़ों घोड़ो अ्रे ।	बड़ा मोटा ताजा घोड़ा है ।
इह घोड़ो पौइयें च़लते ।	यह घोड़ा कदम बांधकर खूब तेज चलता है ।
घोड़ो बड़ो समज़दार पेश्शु अ्रे ।	घोड़ा बड़ा समझदार पशु है ।
अपने मालके झट पशानते ।	अपने मालिक को जल्दी पहचानता है ।
अस् घोड़े पुढ़ सवारी केर्तम् होरो भार भो लद्दतम् ।	हम घोड़े पर सवारी करते हैं और भार भी लादते हैं ।
थोड़ो सेनाई मा भी कम्मे अत्ते ।	घोड़ा सेना में भी काम आता है ।
घौड़े कई रंगां केरे भोतन् ।	घोड़े कई रंगों के होते हैं ।
लाल, नीले, छिट्तो, काले, टपेकन बाले इत्यादि ।	लाल, नीले, छित्ते काले, बीच-बीच में रंग वाले इत्यादि ।

पाठ–१५

शरीरेरे किच्छ अंग

(शरीर के कुछ अंग)

इह मेरी अच्छ अे ।	यह मेरी आंख है ।
अंऊ दूई अच्छेंईं सैईं हेरतां ।	मैं दो आंखों से देखता हूँ ।
मेरे दूई हथ्थ अहन् ।	मेरे दो हाथ हैं ।
दूई हथ्थैईं अंऊ कम्म केर्तां ।	दो हाथों से मैं काम करता हूँ ।
इन मेरु आशीअे ।	यह मेरा मुंह है ।
ऐशी सैईं अंऊ खातां ।	मुंह से मैं खाता हूँ ।
दन्तैईं चापत ।	दान्तों से चबाता हूँ ।
ज़िभी सैईं चखतां ।	जिह्वा से चखता हूं ।
अोठ खोल्ल ।	होंठ खोल ।
नक्के सैईं मुश्क शिंगतां ।	नाक से मुश्क सूंघता हूँ ।
नकशोई साफ लोड़न् ।	नासिकाएं साफ चाहिएं ।
दूइएं ज़घैईं अस् चलतम् ।	दोनों टांगों से हम चलते हैं ।
हेंठी हेंठी ज़ंगा थेकी जेई ।	चल चल कर टागें थक गईं ।
पावन् सुर्त न रेही ।	पांव को होश न रहा ।

पाठ–१६

किच्छ घरेलू पेश्शु : कुछ घरेलू पशु

बच्छी दुध देचे ।	गाय दूध देती है ।
दान्त हली लातन् ।	बैल हल जोतते हैं ।
दान्त छक्ड़े भी च़लातन् ।	बैल छक्ड़े भी चलाते हैं ।
घोड़ पुढ़ सवारी केर्तन् ।	घोड़े पर सवारी करते हैं ।
घोड़ो सेनाई मा कम्मे एत्तै ।	घोड़ा सेना में काम देता है ।
कुत्तर घरेरो पेहरो देते ।	कुत्ता घर का पहरा देता है ।
भेंईं हच्छु दुध देचे ।	भैंस काफी दूध देती है ।
भेड्ड उन्न देचे होरु तसैरू मास खातन् ।	भेड़ ऊन देती है और उसका मांस खाते हैं ।
छैल्ली भी दुध देचे होरू तसैरू मास खातन् ।	बकरी भी दूध देती है और उसका मांस खाते हैं ।
बकारलैं सैईं शैली बटतन्	बकरी के लालों से रस्सी बटते हैं ।
ब्रिल्लाई मूशे खाचे ।	बिल्ली चूहे खाती है ।
मूशे इश्शु अन्न खातन् ।	चूहे हमारा अनाज खाते हैं ।

पाठ–१७

सुरेश–तुश्शु कुण नंव अे जी ?	सु०–आप का क्या नाम है जी ?
नरेश–मेरु नंव नरेश अे जी ।	न०–मेरा नाम नरेश है जी ।
सु०–तुस् कोस् जमाती मा पढतथ ?	सु०–आप किस जमात में पढ़ते हैं ।
न०–अंऊ पंच्ंऊ मा पढतां ।	न०–मैं पांचवीं में पढ़ता हूं ।
सु०–केत्रां मठ्ठां तुस् पंच्ंउ मा पढ़तथ ?	सु०–कितने लड़के आप पांचवीं में पढ़ते हैं ?
न०–शोह्ड़े मठ्ठा अस् प्च्ंऊ मा पढ़तम् ।	न०–सोलह लड़के हम पांचवीं में पढ़ते हैं ।
सु०–हुन्ना तुस् कोरा चलोरेथ ।	सु०–अब आप किधर जा रहे हैं ?
न०–हुन्ना अस् अपने स्कूले च्लोरेम् ।	न०–अब हम अपने स्कूल जा रहे हैं ।
सु०–तुश्शो स्कूल केत्रे बचे़ईं लगते ?	सु०–आप का स्कूल कितने बजे लगता है ?
न०–इश्शो स्कूल दशे बज़ैईं लगते ।	न०–हमारा स्कूल दस बजे लगता है ।
सु०–तुश्शो स्कूल केत्रे बज़ैईं बन्द भोते ?	सु०–आप का स्कूल कितने बजे बंद होता है ।
न०–इश्शो स्कूल च्ऊरे बज़ैईं बन्द भोते ।	न०–हमारा स्कूल चार बजे बन्द होता है ।
सु०–अच्छा जी नमस्ते ।	सु०–अच्छा जी नमस्ते ।
न०–अच्छा जी नमस्ते ।	न०–अच्छा जी नमस्ते ।

पाठ–१८



दैंताल (किसान)

दैंताल बड़ो कृषान भोते ।	किसान बड़ा मेहनती होता है ।
दैंताल छैट्ले उडारे हल चलाते ।	किसान खेतों और उडारों में हल चलाता है ।
ज़मीनी मा बीज़ बेते ।	जमीन में बीज बोता है ।
अन्न उपाते ।	अन्न उगाता है ।
बड़ी मेहनत केर्ते ।	बड़ी मेहनत करता है ।
हर समे कम्मे मा मस्त रेहते ।	हर समय काम में मस्त रहता है ।
धूड़ी मा मिलतां सोन्नू उपाते	धूल में मिलकर सोना उगाता हैं ।
अस् सेभ दैंताले सैंई प्रेम केर्तम् ।	हम सब किसान से प्रेम करते हैं ।
एह इश्शो अन्न दाती अे ।	यह हमारा अन्न दाता है ।
सेभ ज़ोथ दैंतालेरी जय ।	सब बोलो किसान की जय ।

पाठ–१६

दिहाड़ो –सूर्य, निस्नू–- निकलना, डुबनु –डूबना, लो—रोशनी, तपाना—गर्म करना, कीटाणु—कीटाणु, आंधरु—अन्धेरा, लोड़े—चहिए। नित्त—नित्य।



दिहाड़ो (सूर्य)

दिहाड़ो रोज़ पूर्बेरां निसते।	सूर्य रोज पूर्व से निकलता है।
एह नित्त पछमे मा डुबते।	यह नित्य पश्चिम में डूबता है।
पूर्बेरे पासे तुत्तर केर्तां खड़े भोईगाथ।	पूर्व की तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ।
देहने हथ्थे दक्षिण त बावें हथ्थे उत्तर भोलू।	दहने हाथ दक्षिण और बाएं हाथ उत्तर होगा।
दिहाड़ो असन् लो देते।	सूर्य हमें रोशनी देता है।
एह असन् तपाते।	यह हमें गर्माता है।
एह इश्शां अन्नां पकाते।	यह हमारे अनाज पकाता है।
एह कीटाणु मारते।	यह किटाणु मारता है।
दाहड़े केरां आंधारु नशते।	सूयं से अंधेरा दूर होता है।

पाठ–२०

मेलो पट्ट (मेला पट्ट)

पट्ट—चादर, कपड़े, नच़नु—नाचना बेह़ढ़ना—कपड़े, सोन्नू—सोना, हिरानु—दिखाना, भोचन्—होती हैं।

पट्ट बेह़्ढ़नन् जो जोतन्।	पट्ट कपड़ों को कहते हैं।
मेलो पट्ट हर बर्रे भाड्लोहे मा लगते।	मेला पट्ट हर वर्ष भादों मास में लगता है।
मेले पट्टे मा पट्ट नच़ते।	मेला पट्ट में पट्ट नाचता है।
तेना बेह़्ढ़ना हारु सोन्नेरी गागर अक्बर बादशाहे राज़े नागपाले जो ईनामे मा दित्तोरी थी।	वह कपड़े और सोने की गागर अकबर बादशाह ने राजा नाग पाल को ईनाम में दी थी।
ऐस् खुशी मा पट्टेरु कोड्ड मनांऊ गात्ते।	इस खुशी में पट्ट का मेला मनाया जाता है।
राज़े नागपाले दिल्ली मझ़ दरबारै मा अक्बरे जो किच्छ शक्ति हिरोरी थी।	राजा नागपाल ने दिल्ली दरबार में अकबर को कुछ शक्ति दिखाई थी।
पट्टेरे कोड्डे जो लोक नंवी कुकड़ो खातन्।	मेला पट्ट को लोग नई मक्की खाते हैं।
पटटेरे मेलेरि ट्लाई सरकारी छुट्टी भोचन्।	मेला पट्ट को तीन सरकारी छुट्टियां होती हैं।

पाठ-२१

राष्ट्रीय धज़्ज़ा (राष्ट्रीय झंडा)

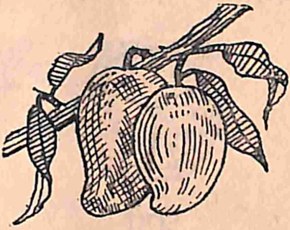
धज़्ज़ा—झंडा, छित्तो—सफेद, मझ़—बीच में, ट्लरंगों—तिरंगा, मान—बड़ाई।



इह इश्शो ट्लरंगो झंडो श्रे।	यह हमारा तिरंगा झंडा है।
एसैरे केसरी छित्तो होरु सब्ज़ ट्लाई रग श्राहन्।	इसके बसन्ती, सफेद, श्रौर सब्ज तीन रंग हैं।
मझ़ गोल ज़ोहरो श्रशोक चक्कर श्रे।	बीच में गोल सा श्रशोका चक्कर है।
ट्लरंगों धज़्ज़ा श्रसन् श्रपनी जानी केरां ट्लारो श्रे।	तिरंगा झंडा हमें श्रपनी जान से प्यारा है।
एसैरो मान होरु श्रादरारे लैई श्रस् सेभ किच्छ निछावर केर्नेरे लैई मझ़ बंधतां तियार श्राहम्।	इसके मान श्रौर श्रादर के लिए हम सब कुछ निछावर करने के लिए कमर बांध कर तैयार हैं।
इश्शो ऐस् ट्लरंगे झंडेरि सदाई जय भोय।	हमारे इस प्यारे तिरंगे झंडे की सदा ही जय हो।

पाठ–२२

अम्ब—आम, पिकड़ोल्लू—टोकरा, अम्बलो—खट्टा, सुखातम्—पसंद करते हैं, मेवा—फल ज़ानतन्—जानते हैं।



अम्ब

तुसेईं सेभेइ अम्ब खोरे भोले ?	आप सब ने आम खाये होंगे ?
अम्ब खाने वाले ज़ानतन् कि अम्बां केरो स्वाद मिठो भोत्ते।	आम खाने वाले जानते हैं कि आमों का स्वाद मीठा होता है।
कच्चो अम्ब अम्बलो भोत्ते।	कच्चा आम खट्टा होता है।
पक्कोरो अम्ब मिठो भोत्ते।	पक्का हुआ आम मीठा होता है।
तेह् पिकड़ोलन् मा रखो गात्ते।	वह टोकरों में रखा जाता है।
अम्ब बड़ो मिठो त सस्तो मेवो अे।	आम बड़ा मीठा और सस्ता मेवा है।
अम्ब जेठ आहड़े मा पेकतां तियार भोतन्।	आम जेष्ठ और आषाढ़ में पक कर तैयार होते हैं।
सेभ लोक अम्ब बड़ी खुशी सैईं खातन्।	सब लोग आम बड़ी खुशी से खाते हैं।
अंऊ अम्ब खूब सुखातां।	मैं आम बहुत पसंद करता हूं।
पर ऐना गरम देशे मा भोत्तन्।	पर यह गर्म देश में होते हैं।

पाठ—२३

तुसेइं सेभेइं—आप सब ने, हेरोरो—देखी, भोली—होगी, सैइं—से या साथ, बेला—समय, कम्म—काम, मेह्ल्नू—मिलना।

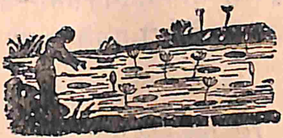


घड़ी

तुसेइं सेभेइं घड़ी अवश्य हेरोरी भोली।	आप सब ने घड़ी अवश्य देखी होगी।
घेड़ी सैइं टेम मालूम केर्तन्।	घड़ी से समय मालूम करते हैं।
बेले बेले पुढ़ कम्मां केर्ने सैइं सेभ कम्मां ठीक भोत्तन्।	समय समय पर काम करने से सब काम ठीक होते हैं।
हर कम्म बेले कुबेले न लोड़े कियोरु।	हर काम अपने समय पर करना चाहिये।
अज़काल कई किस्मां केरी घड़ी बज़ारे मा मेल्हचन्।	आजकल कई किस्मों की घड़ियां बाजार में मिलती हैं।
पुराने ज़माने मा धुप्प त रेत्तारी घेड़ी भोती थी।	पुराने जमाने में धूप और रेत की घड़ियां होती थीं।
घेड़ी मा दूई सूई भोचनू।	घड़ी में दो सूईयां होती हैं।
निक्की सूई घेण्टन् जो होरु बड्डी सूई मिण्टन् जो हि्राचे।	छोटी सूई घण्टों को और बड़ी सूई मिण्टों को दिखाती है।
घड़ी ज़रूर रखोरी लोड़े।	घड़ी अवश्य रखनी चाहिए।

पाठ-२४

ज़ल—पानी, उपज़े—उत्पन्न होता है, मेल्हत्ते—मिलता है, खूह्—कूआं, बांई—बावली, नाग—चश्मा, स्त्रोत, अथवा नाग देवता।



जल (पानी)

ज़ले जो पानी भी ज़ोतन्।	जल को पानी भी कहते हैं।
ज़ल सेभी केरी जानारो आधार अे।	जल सबकी जान का आधार है।
ज़ले बिना कोई अन्न न उपज़ो।	जल के बिना कोई अनाज उत्पन्न नहीं होता है।
इश्शी जानो मा भी दूई तिहाई ज़ल अे।	हमारी जान में भी दो तिहाई पानी है।
मनुखे ज़ले सैईं अपना छै्ट्लां सग्गां, ढ्लाटां चलां होरी बिजली बनाई।	मनुष्य ने जल से अपने खेत सींचे, घराट चलाए और बिजली बनाई।
ज़ल कई रूपन् मा असन मेल्हत्तो।	जल कई रूपों में हमें मिलता है :—
खूह, नदी, नालो, बांई, नाग झील होरु समुद्र इत्यादि। कधी पानी, कधी हिऊ, कधो आन्न, कधी ट्रैल होरु झड़ी वगैरा।	कूआं, नदी, नाला, बावली, स्त्रोत, झील, इत्यादि। कभी पानी, कभी बर्फ, कभी ओले, कभी ओस, और वर्षा इत्यादि।

पाठ–२५

लोक–लोग, ज़ानतन्–जानते हैं, कर्‌रो–सूंड, पोंछड़ी–छोटी दुम, ज़ंगा–टांगें, हाथी दन्त–हाथी दान्त, नेत्‌ते–ले जाता है, ठार–जगह, दूईयों–दूसरा, दूसरी, मा–में, निक्कड़ी–छोटी, निकड़ो–छोटा, भारो–बोझ, तेसैरी–उसकी, तेसैरी एत्‌ते–ग्राता है ।



हाथी

सेभ लोक हेथी बड़े घट ज़ानतन् ।	सब लोग हाथी को बहुत कम जानते हैं ।
हाथी ग्रक् बड़ो बलवान् त भारी पेश्शु ग्रे ।	हाथी एक बड़ा बलवान् तथा भारी पशु है ।
तेसैरो ग्रक् कर्‌रो होरी निक्कड़ी ज़ेरी पोंछड़ो भोचे ।	उसकी एक सूंड ग्रौर छोटी सी दुम होती है ।
तेसैरी मोट्‌टी मोट्‌टी ज़ंगां ज़ेरे बड़े बड़े थम भोत्तन् ।	उसकी मोटी मोटी टांगे जैसी बड़े बड़े खम्बे होते हैं ।
तेह सवारो होरु शिकारेरे कम्मे ऐत्ते ।	वह सवारी तथा शिकार के काम ग्राता है ।
कर्‌रो ऐस् हथ्थेरु कम्म देत्ते ।	सूंड इसके हाथ का काम देती है ।
हाथी दन्त बड़े माघे भोत्तन् ।	हाथी दांत बड़े बहुमूल्य होते हैं ।
हाथी एक्की ठारारां दूइयों ठेरी बाहरे तेह्‌रे मन भारो उठैतां नेत्‌ते ।	हाथी एक जगह से दूसरी जगह बारह तेराह मन बोझ उठाकर ले जाता है ।
हाथी सर्कसे मा कम्मे ऐत्‌ते ।	हाथी सर्कस में काम आता है ।

पाठ-२६

उच्चो भोनू-ऊंचा होना, स्वर्गबाश-स्वर्ग सिधारना, छ़ैल्ली-बकरी।



महात्मा गांधी

बेपू जीआं केरु नंव शुनतां आदरी सैईं इश्शो मथ्थो उच्चो भोई गात्ते।	बापू जी का नाम सुनकर हमारा सर मान से ऊंचा हो जाता है।
अस् सेभ भारती प्यारे सैईं गांधी जो, ज़ेनकेरु पूरु नंव मोहन दास कर्म चन्द गांधी थू केवल बेपू जो ज़ोतम्।	हम सब भारतीय प्यार से गांधी जी, जिनका पूरा नाम मोहन दास कर्म चन्द गांधी था केवल बापू जी कहते हैं।
तेना बड़ू सादू भोजन खाते थिए।	वह बड़ा सादा भोजन खाते थे।
फलां केरो रस त छ़ैल्लारु दुध पीते थिए।	फलों का रस और बकरी का दूध पीते थे।
तेना स्वेदशी खद्दरेरो प्रचार	बह स्वदेशी खद्दर का प्रचार करते

केर्ते थिए, कणे अप्पू लाते थिए।	थे, साथ स्वयं पहनते थे।
बेपू जी दूई अक्टूबर १८६९ ज़रमे त ३० जनवरी १९४८ जो गोली सैईं मारे जेऐ।	बापू जी २ अक्टूबर १८६९ में जन्मे और ३० जनवरी १९४८ को गोली से मारे गये।
तेना हिन्दू मुस्लमान, सिक्ख, तथा ईसेयन् सैईं बराबर प्यार केर्ते थिए।	वह हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख, और ईसाईयों से बराबर प्यार करते थे
अहिंसा होरु सत्याग्रह गांधी जीआंकेरे बड़े हथ्यार थिए।	अहिंसा और सत्यग्रह गांधी जी के बड़े हथ्यार थे।
गांधी जी अहिंसारे पुजारी थिए।	गांधी जी अहिंसा के पुजारी थे।
सैभेईं गांधी जी आंकेरे ज़ोरी बत्तो पुढ़ चलोरु लोड़े।	सब को गांधी जी के बताए हुए प पर चलना चाहिए।
बेपू जी सारे संसारे मा महात्मा गेंधेरे नवें सैईं प्रसिद्ध अहन्।	बापू जी सारे संसार में महात्म गांधी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

पाठ–२७



पं० जवाहर लाल नेहरू

पं० जवाहर लाल नेहरू नवें भारतेरे निर्माता थिए।	प० जवाहर लाल नेहरू नये भारत के निर्माता थे ।
तेना बड्डे नेता थिए।	वह बड़े नेता थे।
पं० जी आज़ाद भारतेरे सेभना पहिले प्रधान मन्त्री थिए।	पं० जी आज़ाद भारत के सब से पहिले प्रधान मन्त्री थे।
तेना सादू जीवन बिताते थिए।	वह सादा जीवन व्यतीत करते थे।
देशेरेलै तेणेईं बड़े कष्ट उठाए, कणे जेलन् जेऐ।	देश के लिये उन्होंने बड़े कष्ट उठाये साथ ही जेल भी गये।
तेनेईं पूरे तन, मन, होरु धने सैईं देशेरि सेवा की।	उन्होंने पूरे तन मन और धन से देश की सेवा की।

बच्चन् सैईं नेहरू जी बड़े प्यार केर्‌ते थिए ।	बच्चों के साथ नेहरू जी बड़े प्यार करते थे ।
नेहरू जी १४ नवम्बर १८८९ जो ज़रमे ।	नेहरू जी १४ नम्वबर १८८९ को जन्मे ।
होरू १९६४ मा स्वर्गवाश भोई जेए ।	और १९६४ में स्वर्गवास गो गये ।
आह पं० जो इश्शे बड़े प्यारे लीडर थिए ।	आह पं० जी हमारे बड़े प्यारे लीडर थे ।
आंह पं० जी आं केरे न भोने सैईं असन् सेभन् बड़ो घाटो भूओरो ओ ।	आह पं० जी के न होने से हम सब को बड़ी हानि हुई है ।
नेहरू जी, पंच शीलारे जन्म दाता, सारे संसारे मा शेन्तारे लैई प्रसिद्ध थिए ।	नेहरू जी, पंचशील के जन्म दाता, सारे संसार में शान्ति के लिए प्रसिद्ध थे ।

पाठ–२८

कथा

अक् थूं काऊ। अक् थी शारी। काऊ डाले पुढ़ बिश्शोरु थूं। शारी डेलो पुढ़ बिश्शोरी थो। शारी चूं चूं केर्ने लगोरी थी। काऊ चूप कौंची ठोकी मा थूं, मझां एक्के निक्कड़े बच्चे तेना लाहे तां केर्लों :–

आन् व कावा दंगोड़ी,
बधम् शेरारी ज़ंघोड़ी।
आन् ब कावा दंगोड़ी,
बंधम् शेरारो ज़ंघोड़ी।

शेरां झट छ्ड़ शुनी होरू उडतां अपने प्राण बचाए।

एक था कौआ। एक थी चिड़िया। कौआ डाल पर बैठा था। चिड़िय डाली पर बैठी थी। चिड़िया चूं चूं कर रही थी। कौआ चुप किसी ताक में था। अकस्मात् एक छोटे बच्चे ने उन्हें देखा तो चिल्लाया :—

ऐ कौये रस्सी लाओ,
ताकि हम चिड़िया की छोटी सी टांग बांध दें।
ऐ कौये रस्सी लाओ,
ताकि हम चिड़िया की छोटी सी टांग बांध दें।

चिड़िया ने झट आवाज़ सुनी और उड़ कर अपने प्राण बचाए।

पाठ—२६

चुटकले—१

होनहार बच्चो :— ओ बुढ्ढी मौसी। कुण लगोरिस केर्ने ?

बुढ्ढी :— बच्चा ! छटचां धूड़ी मंझ़ेरां गलौव तालचां ! होरु कुण ? केत्र बोड्डू कम्म ओ ?

होनहार बच्चा :— कुण एन् भी बड़ू कम्म ओ ! बुढ्ढी मौसी ! मेरां हेर।

अंऊ लिखनू पढ़नू छटतां,
त विद्याधन तालतां।

बुढ्ढी :— (खड़ खड़ हसी) मेरे ट्लारो बच्चो ज़ोईता गले लाव।

होनहार बच्चा :— ऐ बूढ़ी मौसी ! आप क्या कर रही हैं ?

बूढ़ी।— बच्चा मैं फटक कर मिट्टी में से दाने अलग कर रही हूँ। और क्या ? कितना बड़ा काम है ?

होनहार बच्चा :— क्या यह भी बड़ा काम है ? बूढ़ी मौसी ; मुझे देख, मैं लिखना पढ़ना फटक कर विद्या धन को चुनता हूँ।

बूढ़ी :— (कहका लगाकर हंसी) मेरा प्यारा बच्चा कह कर गले लगाया।

पाठ—३०

चुटकले—२

पुराने ज़माने मा अक् हकीम थियो, बड़ो मन्नोरो तन्नोरो। सेभ लोक तेस केर्ां सलाह घिनते थिये। दूर दूर तक्र तेस् ज़ानते थिऐ। एक्की निगां कुण भोत्तेकि हसीम साभन् काह् सेभ बिश्शोरे थिऐ तां अक् मेनु हथ्थ ज़ौले केर्तां आओ त बिनती केर्ने लगो :—

'हे महाराज़ रोट्टि किताली खोरी लोड़े''

हकीम साभेईं भट जवाब दित्तो, ''अमीरे ज़िताली ढ्लुख लगें त गरीबे ज़िताली मल्हे।'' अेन शुनतां सेभ खुश भोई जेए। बड़ो जय जयकार भूई त सेभ लोक अपने अपने घरन् जो चले जेए।

प्राचीन काल में एक हकीम था, बहुत माना हुआ हकीम था। सब लोग उस से सलाह लेते थे। दूर दूर तक उसको जानते थे। एक समय क्या हुआ कि हकीम साहिब के पास सब लोग बैठे हुए थे कि तब एक मनुष्य हाथ जोड़ कर आया और बिनती करने लगा।

हे महाराज ! रोटी कब खानी चाहिए। हकीम साहिब ने भट उत्तर दिया, ''अमीर को जब भूख लगे और गरीब को जब मिले।'' यह सुन कर सब प्रसन्न हो गए और बड़ी जय-जयकार हुई और सब अपने अपने घरों को चले गए।

पाठ–३१

रोड़ू मठ्ठू

रोड़ू मठ्ठू ज़ेभ्भां सबेले उठते। हथ्थ तुत्तर धोत्तो। नहाते। निहारी खाते। निहारी दुध या छाह ज़ेन मल्हे तेने खात्तो। तैसपति अपनू पाठ पढ़ते। बेले बेले पुढ़ पाठशालाई गात्तो। टेमे पुढ़ कैलौ खाते। चऊरे बज़ेईं सिध्धो घरे एत्तो। दी सोल या उङ्गल खात्तो। पत्ति किच्छ पढ़ते किच्छ लिखते। ड्लौज़ां सैल केर्ते होरु खेडते। ड्लाई खेईतां होरु किच्छ पेढ़तां भ़ुल्ली गात्तो। मठ्ठाऊ! रोड़ां मठ्ठां बनां।

अच्छा लड़का प्रात:काल उठता है। हाथ मुंह धोता है। नहाता है। कलेवा दूध या छाछ जो मिले वही खाता है। उसके पश्चात् अपना पाठ पढ़ता है। समय समय पर पाठशाला जाता है। समय पर दो पहर का खाना खाता है। चार बजे सीधा घर आता है। दीसोल या उङ्गल (तीन या चार बजे दूध, चाय या रोटी) खाता है। उसके उपरान्त कुछ पढ़ता है कुछ लिखता है। शाम को सैर करता है और खेलता है। ड्लाई (Dinner) शाम की रोटी) खा कर और कुछ पढ़ कर सा जाता हैं। लड़को! अच्छे लड़के बनो।

पाठ-३२

*पुनेनी

१. पार बने सिह घुरके,
मेरे हथ्थे पोंछड़ सुरके।

२. चिपचिप कुण्डड़ो चिपचिप बाट,
ज़े मेरी पुनानी न पुने तेसैरो बऊ हगनाट।

३. हथ्थैं केर्ते छनपुन छ ुनपन पावैं केर्ते जुद्ध,
राजा जी पुनानी दित्ती मेहता जी तू बुझ।

४. पुन पनानी सीहे रानी,
तद्दे फंगां पीए पानी।

५ हर मिण्झल रानी,
सिरे धूप्प त पावन् पानी।

६. इत्ड़ी मित्ड़ी तांग तड़ेईं,
बड्डो भोई त राजें डरेईं।

---

*पहेलियां

१. चर्खा। २. मधु। ३. जुलाहा। ४. इन्द्र धनुष।
५. धान। ६. लाल मर्च।

पाठ–३३

*ड्लुण्टू

दुसेहेरे दिहाड़े ड्लुण्टू ऐत्तो। ड्लुण्टू भड्लाहेरू अक् मश्हूर तीहार अे। हर बर्रे एन् तिहार अशोज सहीने मा ऐत्तो। सेभ लोक एन् तिहार बड़ी खुशी सैईं मनातन्। अपने मेरे सेरां कुटुम्वे होरू कुइयन् धामां केर्तन्, एस् खुशी मा सेभ नवें धानेरी खिचड़ी बनेतां अनन्दे सैईं अेप्पू खातन् होरन् खावतन्। झेझां खिचड़ी बनेईतां गरीबन् बन्टतन्। सेधू संतन् दान देतन्। सभे लोक नव्वीं फसल खातन् त परमेश्वरेरे गुण गातन्। सेभ मैनू अपनी त अपने घरां केरी सफाई केर्तां खुश खुश लैहोतन्।

---

*वर्ष का नवान्न् भक्षण दिवस्। दुपेहरा के दिन ड्लुण्टू आता है। ड्लुण्टू भद्रवाह का एक बड़ा त्योहार है। हर वर्ष यह त्योहार आश्विन मास में आता है। सब लोग यह त्योहार बड़ी खुशी से मनाते हैं। अपने मेरे सारे कुटुम्बी और लड़कियों को धाम कहते हैं। इस खुशी में सब नए चावल की खिचड़ी बना कर आनन्द से स्वयं खाते हैं। औरों को खिलाते हैं। प्रातःकाल खिचड़ी बना कर गरीबों में बांटते हैं। साधु सन्तों को दान देते हैं। और सब लोग नई फसल खाते हैं। परमेश्वर के गुण गाते हैं। सब मनुष्य अपनी तथा अपने घरों की सफाई करके खुश खुश दिखाई देते हैं।

पाठ–३४

लड़नू बुरू ऐ

शेरी नित्त इश्शे आंगने मा च.ून च.ुनती पर जादे लेड़ती लैहोचन्। गल्ल साफ ऐ कि एक्की निगां एक्की शेरी निकड़ो जेरो रोट्टारो टुकड़ो मल्हो। दूईयोंव शेरां दौड़तां बदोबदी तैस्केरां थसोड़नो लाव। दूईये शेरी अेप्पू मा मेई पोंटोने लगी। डाले पुढ़ काऊ चिरोकनू ढोकी मा बिशेशोरु थूं। झट उड़ू त रोट्टी भसोड़तां मज़ो सैई खाने लगू। खिसलोरी शेरी हेरती रेही जेई। अज़ तक्कर तेनन् केबल लड़नू हथ्थे लगू।

शिक्ष :– लड़नू बुरु ऐ।

लड़ना बुरा है

चिड़िया नित्य हमारे आंगन में चोग चुगती, परन्तु ज्यादातर लड़ती हुई देखी जाती हैं। बात साफ है कि एक बार एक चिड़िया को छोटा सा रोटी का टुकड़ा मिला। दूसरी चिड़िया बल पूर्वक छीनने लगी। दोनों चिड़ियां आपस में खूब लड़ने लगीं। डाल पर कौआ देर से ताक में बैठा था। शीघ्र उड़ा और रोटी छीन कर आनन्द से खाने लगा। लज्जित चिड़ियों देखती रह गईं। आज तक उनको केवल लड़ना ही हाथ आया।

शिक्षा :– लड़ना बुरा है।

पाठ—३५

लिल्लेश्वरी जी

कश्मोरेरे लोक लिल्लेश्वरी जो सदाई याद रखेले।

लिल्लेश्वरी अज़ेरां पुढ़ श:शौ साल पेहले कश्मीरेरे सीम पुर ड्लऊवें मा एक्की निके ज़ेरे ब्रह्मण घरानेमा ज़रमोरी थी। पर सेभ हिन्दू मुस्लमान तैसारी बड़ो आदर केरते थिए। तैसारु उठन बिशन् जादे सेधू संतन सैईं थूं। सेरी उमरी ते हिन्दू मुस्लमान भाईचारेरी शिक्ष देती रही। तैसारे दोहे कश्मोरेरे लोक बड़े चावे सेईं गातन्। ते ज़ोती थी कि मनुकेरे धर्म अपने अपने भोने सैईं मैनुकेरे भाई चारे मा कोई फंक न पेए। कि जोकि सेभ धर्म अप्पू मा मेईं बैर न शिखान्। ते जोती थी कि बुरेमैनन् केरां बचा। लालच न केरा। एह बुरेई केरी ज़ड़ अ। सारे धर्म सच्चेरी शिक्ष देतन। असेईं सेभेईं तैसारे ज़ोरे पुढ़ चलोरु लोड़। एसे मा ईश्शु सेभो केरु भलू अ।

कश्मीर के लोग लिल्लेश्वरी को सदा याद रखेंगे। लिल्लेश्वरी आज से ६०० साल पहिले कश्मीर के सीमपुर गांव में एक छोटे से ब्राह्मण घराने में जन्मी थी। परन्तु सब हिन्दू और मुस्लमान उसका बड़े मान करते थे। उसका साथ अधिकतर साधू सन्तों से था। सारी उमर वह हिन्दू मुस्लम भाई-चारे की शिक्षा देती रही। उसके दोहे कश्मीर के लोग बड़े आनन्द से गाते हैं। वह कहती थी कि मनुष्यों के धर्म अपने अपने होने से मनुष्यों के भाई-चारे में कोई फर्क नहीं पड़ता है। क्योंकि सब धर्म आपस में बैर करना नहीं सिखाते। वह कहती थी कि लालच न करो। यह बुराई की जड़ है। सारे धर्म सच्चाई की शिक्षा देते हैं। हम सबको उसके कहे हुए पर चलना चाहिए, इसमें हम सबका भला है।

पाठ-३६

भगवान् श्री कृष्ण जी



श्री कृष्ण ज़न्म अष्टमी सेभ भारती हर बेर्‌रे बड़े चावे सैईं मनातन्। ईश्शे भिड्लाहे मा भी हर पासेरां श्री कृष्ण जीयां केरी झैंकी ऐ चन्। बज़ारे मा बड़ी आग्रो जाई भोचे। हेट्टी सेज़ोरी भोचन् सेभ मैंनु तेनकेरी ज़रम दिहाड़ी बड़े चावे सेईं मनातन्। ज्ञानी त पंडित लोक श्री कृष्ण जीयां केरे जीवने पुढ़ ब्याख्यान केरतन्। असेईं सेभेईं प्रण लोड़े कियारु कि अस् अत्याचारेरे बिरुध अपनो सारो ज़ोर लाहमले। भगवान् कृष्णैईं असन् गीता जीयां केरु भारी दान दित्तोरु अे। भगवान् श्री कृष्ण जी गीताई मा ज़ोतन् कि ईश्शी आतमा अमर अे। "अंऊ सर्वव्यापक त अन्नत रुपन् बोलो आहीं"। ज़ेस् भावे सैईं ज़े मी स्मरण केरते, अंऊ तेस्से भावे मा तेना कामनाई पूरी कर्‌तां।" असन् सेभन् लोड़े कि निडर भोईतां अत्याचार समाप्त केरनेलै तन, मन होरु धने सैईं पूरो जतन केर्‌म्। सेभ मनुखन् सैईं प्रेम केर्‌म्। एहे प्रेम त भेक्ति रो छैल ढंग अे।

ज़ौथ श्री कृष्ण जीयां केरी जय।

श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी सब भारती प्रति वर्ष बड़े चाव से मनाते हैं।

हमारे भद्रवाह में भी हर दिशा से श्री कृष्ण जी की झांकियां आती हैं। बाजार में बड़ी आओ जाई होती है। दुकानें सजी हुई होती हैं। सब मनुष्य उनका जन्म दिवस् बड़े चाव से मनाते हैं। ज्ञानी और पण्डित लोग श्रीकृष्ण जी के जीवन पर व्याख्यान करते हैं। हम सब को प्रण करना चाहिए कि हम अत्याचार के विरुद्ध अपना सारा ज़ोर लगायेंगे। भगवान् श्री कृष्ण ने हमें जो गीता जी का भारी दान दिया है। भगवान् श्री कृष्ण जी गीता में कहते है कि हमारी आत्मा अमर है। मैं सर्वव्यापक और अनन्त रूपों वाला हूं। जिस भाव में जो मुझे स्मरण करता है, मैं उसी भाव में वह कामनायें पूरी करता हूं। हम सब को चाहिए कि नडर हो कर अत्याचार समाप्त करने के लिए तन, मन और धन से पूरा यत्न करें। सब मनुष्यों से प्रेम करें यही प्रेम और भक्ति का अच्छा ढंग है। बोलो श्रीकृष्ण जी की जय।

पाठ–३७

चिड़ोल्ली

प्यारी उडती चिड़ोल्ली आई,
बच्चे एसारे आहन् ट्लाई।
मेरे मने बड़ी भाई।
कीड़े मकोड़े च़ून लाई।
निक्के बचेईं शोर मचाई,
चुंचां खोल्ली बच्चे ट्लाई।
एत्ती गेंत्ती शोर मचेंती,
उद्यम् केरा शिक्ष देंती।

प्यारी चिड़िया उड़ती हुई आई,
इसके तीन बच्चे हैं।
मेरे मन को बड़ी भाई है।
कीड़े मकोड़े चोगा लाया,
छोटे बच्चों ने शोर मचाया।
तीन बच्चे चोंचें खोले हुए हैं,
आती जाती शोर मचाती हैं,
उधम करो यह शिक्षा देती हैं।

पाठ–३८

कैलाश यात्रा

आहा कैलाश यात्रा आई ,
सेभेईं मिलतां खुशी मनाई ।
झ़ेझ़ां मिलतन् सारे भाई ,
हिन्दू मुसस्मि सिक्ख ईसाई ।
बारी कैलाशे चढ़नेरी आई ,
लेन सुन्दर छेड़ां बनाई ।
शंख पद्धर सेवीज़ नज़ारे ,
बड़े सुन्दर फूड़न् बाले ।
नीलू ठंडू पानी सुहाए ,
कुण्ड कैलाशे सेभ नहाए ।
ऐना भाड्लोहेरी यादां प्यारी ,
केर्चन् मस्त "माधव" सेरी ।

आहा कैलाश यात्रा आई । सब ने मिल कर खुशी मनाई । प्रातः काल सब भाई मिलते हैं । हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख, ईसाई । अब कैलाश पर्वत पर चढ़ने की बारी आई । एक सीधी लाईन बनाते हैं । शंख पद्धर और सेवीज के निज़ारे बड़े सुन्दर और फूलों वाले हैं । कुण्ड कैलाश का पानी नीला, ठण्डा और सुहाना है । कैलाश कुण्ड में सबने स्नान किया । यह सब भादों मास की यादें हैं । माधव कहता है वि वह सब मस्त करने वाली हैं ।

पाठ—३६

मजूरेरु सुपनू

एन्न न समझा कि झ़ुल्लोरे आहम् ,
चिण्डू प्यारे सारे साहम् ।
अपने हेर्‌तम् चोर च़ुबारे ,
रंग बदलते नवें सारे ।
फिर भी ज़रा लेटोरे आहम् ,
एन्न न समझ़ कि झ़ुल्लोरे आहम् ।
कदी न बुरो विचार भी आओ ,
कदो न अपनो मन डगमगाओ ।
हमेशा एक्की डगरो च़लतम् ,
मन भी सदाई पक्के रखतम् ।
एन्न न समझा कि झ़ुल्लोरे आहम् ,
चिण्डू प्यारे सारे साहम् ।
झोंको छैल हवारो आओ ,
अेच्छ़ी मेल्ली घेर च़ुकाओ ।
चित्र सुहानो सामने आओ ,
तां भी ज़रा लेटोरे आहम् ,
एन्न न समझा कि झ़ुल्लोरे आहम् ।
अपने मेरे अंग आहन् सारे ,
लगचे एक्को दुःख पुजते सारे ।
बुझ़ण एन् ढ़्लाः ईश्शे सारे ,
लाल अस् भारत मातरे आहम् ।

एन्न न समझा कि झ़ुल्लोरे आहम् ,
चिण्डू ध्यारे सारे साहम् ।

झ़ुल्लोरे—सोए हुए, साहम्—सहन करें, हेरतम्—देखते हैं, छैल—सुन्दर, अेच्छी—आंखें, बुझ़ण—समझें, ढ्ला:—भाई (बहु वचन) ढ्ल:—(एक वचन) भाई। मजूर—मज़दूर, सुपनू—स्पन, हेरतम्—देखते हैं, लेटोरे—लेटे हुए, डगरी - रास्ता, एक ही मार्ग में, घेर—चक्कर, तां—तब, लगचे—लगती है, पुज़ते—पहुँचता है, इश्शे—हमारे, लाल—बेटे, आहम्—हैं, चिण्डू—तीव्र पीड़ा, शरीर के किसी भी अंग को अंगुली या नाखून के ज़ोर से दबा कर असहीय पीड़ा पहुँचाना।

पाठ-४०

गिनती

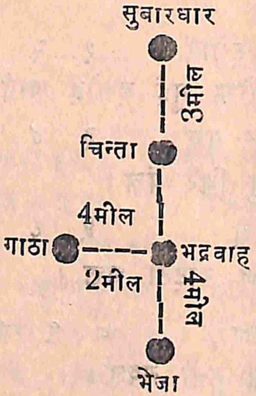
अक् दूई ट्लाई, १ २ ३
ड्लोझ भुई ड्लोई खाई।
ट्लाई चऊर पंच, ३ ४ ५
मैनु घिरे पंच।
पंच शः सत्त् ५ ६ ७
दाल रोट्टी भत्त।
अठ नव दश, ८ ९ १०
बस हुनी नश्श।

अक्	दूई	ट्लाई	चऊर	पंच	शः	सत	अठ	नव	दश
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

याह्रे	बाह्रे	तैह्रे	चौह्दे	परह्ने
११	१२	१३	१४	१५
शौह्ढ़े	सताह्रे	अठाह्रे	उन्नीह्	बीह
१६	१७	१८	१९	२०
तीह	चैलीह	पचांह	शठ	सहतर
३०	४०	५०	६०	७०
	अश्शी	नब्बे	शौ	
	८०	९०	१००	

पाठ–४१

भिड्लाहेरां कोड्डां (मेले)



ऐजा जीतुसन् बड्डां बड्डां कोड्डां या भिड्लाहेरे मेलन् सैइ घखज़ेरी बाकमी केरैं। एना सेभ कोड्डां आखरी चै़ट्लै केरां शुरू भोतन् त साल भेर्तां ऐंचै़रे चलता रेहतन् एना छे़डतां होरां कई कोड्डां ड्लऊंवें ड्लऊंवें मा लगतन्। तेना किच्छ इना आहन्।

१. सुबारधारेरू कोड्ड सुबारधारे चिन्ते केरां ३ मील दूर दीसां लगते। एन् कोड्ड सेहो चै़ट्लेरी मासान्ती जो भोते।

२. पेहली बैशेखी जो एन् कोड्ड नगरी भिड्लाहेखासे मा बासक देहरे दीसां मनातन्। कोड्ड हेर्तां ऐसैरी महानतारो पूरो पतो लगते।

३. दूईयोंब बैशेखी जो गाठे ड्लमने मा दीसां कोड्ड मनातन्।

एनन् ट्लैइये कोड्डन् जो बसोऐरां कोड्डां ज़ोतन् ।

४. शाऊन भाड्लोहे मा जाट्लां शुरू भोचन् । ड्लऊंवें ड्लऊंवें मा किच्छ दीसां किच्छ रातीं कोड्डां लगतन् । पट्टरू कोड्ड भी अक् मशहूर मेलो श्रे । ज़सैरो हाल पेहले दितौरो श्रे । हेरतां मेनु बड़ो प्रसन्न भोत्तो ।

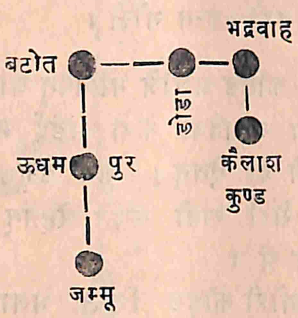
५. शादू—एन् कोड्ड अशोजे मा पितृ बांसी जो राती भेज्जे ड्लमने मा बाशदेवां केरी मंडेई मा लगते । बड़े मैनू कोड्ड हेरने जो ऐतन् । शवैं ढेकू ढोल बाज़ो पुढ़ कई पेन्हन् मा सेरी राती नच़ते रेहतन् । बड़ू छैल हेरने जोग कोड्ड श्रे ।

६. मालचैं आखीरी कोड्ड चिन्ते, भलारे होरू भलेशे राती मानतन् । खरां मश्हूर कोड्डां आहन् ।

बाकमी—बाकफीयत, जाट्लां—खाने पीने के बड़े दिन, ड्लऊं—गांव, मेनु—मनुष्य (एकवचन), मैनू—(बहुवचन मनुष्य) दीसां—दिन को, धखज़ोरा—थोड़ी सी, छेड़तां—छोड़ कर, हेरनू—देखना, ड्लमन—मैदान, ऐंचेरे—इसी तरह, वाशदेव—वासुकी नाग ।

पाठ—४२

भिड्लाहेरी किच्छ दर्शनीक ठारां
(भद्रवाह के कुछ दर्शनीय स्थान)



भिड्लाह (छोटा कश्मीर) ज़ोम्मू खासेरां १२८ मील दूर ५४२० फुट उचेई पुढ़ अे। ज़ोम्मेरां रोज़ गेड्डी ऐच्न् गेच्न्। अेसेरे साथी च्म्बू (हिमचल प्रदेश) लगते। भिड्लाहेरी बेड्डी दर्शनीक ठारां तुस् अवश्य हेरेथ। तेनन् मा किच्छ इनां आहन् :—

१ इह गुप्त गंगा त इण् गुप्तगंगारु मन्दर अे। सारू मन्दर घोड़ांकेरू बनोरू अे। अन्त्तर पैनेरो फुहारो अति सुन्दर अे। अेकी पासे बड़ू सुन्दर बाग अे। अग्ग्र दरया त छ़ैट्लां केरो बड़ो सुहानो दृष्य अे। हेरतां मन प्रसन्न भोई गात्ते।

२. इन बासुकी नागेरु मन्दर भी हेरा। हेर्थ दूरेरां मन्दरेरो कलश केरो छ्ल छ्ल करतो लैहोत्तो। सामने नगरारे पछमे मा पुरानो किलो भी अे। वासुकी नागेरे मन्दरेरां सारी

नागर अगरोरां ज़ैंच़ रे हथ्थेरी तई लैहोचे ।

३. ज़रा उबरी नज़र उठैतां हेरा । शंख पद्धर नज़री मा अे । अेस् साथी सेवीज़ेरु मैदान अे । लोक सैली शंख पद्धरे त सेवज़ी ऐत्तान् । एना बड़ी सुन्दर ठेरी आहन् ।

४. अग्ग्र च़ला कुण्ड कैलाश हेरा । नीले ठण्डे पैनेरी सुन्दर भील अे । कैलाश कुन्ड भड़्ला हेरां १५ मील दूर १४००० फुट उचोई पुढ़ वाकिया आहे । हेरने जोग अे । हर दूईयोंव वेर्‌रे इड़ी यात्रा भोचेकणे भड्लाहेरां छड़ा कैलाशे ऐच्चे । सेभ मैनू कुण्ड कैलाशे मा नहातन् । अेड़े नहनेरु बड़ू महातम् अे । कैलाश यात्रा बड़ी मश्हूर अे । कैलाश यात्रारो अनन्द ज़रूर उठोरो लोड़े ।

५. आशापति भिड्लाहेरां दक्षिण पूर्वें मा हेर्‌ने जोग तीर्थास्थान अे । दूरेरां हिंऊ लैहोत्ते । एह पूज़ने जोग ठार नगरेरां १० मील दूर अे । हर ट्लैयोंव बेर्‌रे तैड़ो भिड्लाहेरां छड़ी गाचे । प्राचीन मश्हूर तीर्थास्थान अे । लोक अेड़ी नहैतां श्राद्ध केर्‌तन् होरू दान देतन् ।

६. पद्धरी त भाल पद्धरी बेड़ी सुन्दर ठेरी आहन् । सैलानी सैल केर्‌ने अेड़ी ऐत्तन् । सेभ लोक हेरतां खुश भोतन् ।

७. सुबार नाग उच्चो ठारी पुढ़ बास केर्‌ते । सुबारधार हेर्‌ने जोग ठार अे ।

८. जाई भी हेर्‌ने जोग ठार अे । सैलानी ठण्डू पानो पीतन् होरो ठण्डी हवा खातन् त बड़े खुश भोई गातन् ।

जा आरु सुन्दर मैदान हेर्ने जोग अे।

९. रहूशर भी अक् छ़ैल ठार अे। रहूशरे सीतला देबारु मन्दर अे। एह बड़ी तातकाल देवी अे। बड़े दूरां दूरां बिशोलारां तचम्बेरां लोक अेड़ी जात्राई सैई ऐत्तन्। बड़ो दर्शनीक ठार अे।

मैनू—मनुष्य (बहुवचन), दर्शनीक—देखने योग्य, ठारी—जगह (एक वचन), ठरी—जगहें (बहु वचन), अन्तार—अन्दर, लैहोते—दिखाई देता है, अग्ग्र—आगे, उबरी—ऊपर। हेरा—देखो, छ़ैट्लां—खेत, बाशदेव—बासुकी नाग, लोड़े—चाहिए, सैलानी—सैर करने वाले, हिंऊ—बर्फ, एढ़ी—यहां, नहैतां—नहा कर, जोग—योग्य, आह्न्—हैं, पासे—दशा में, जेचे्रे—जिस तरह, हथ्थेरी—हाथ की, तई—तली, तुस्—आप। तात्काल—साक्षात्, दूइयोंव—दूसरा, दूसरे, बेर्रे—साल में, ऐचन्—आती हैं, गेचन्—जाती हैं, पुढ़—पर, हेर्थ—देखिए।

पाठ–४३

बिनती

विनती ईश्शी नादानां केरी शुन्थ हे भगवान्,
क्षिमा केरेथ् खेरी बतां लैयथ दैयथ बुद्धि दान,
दान दैयथ बल बिद्यारू तुसे,
कि भोय उच्चय जीवन उद्देष्य भी इश्शे,
पूर्ण तेणन् केनेरे तुस दैयथ सहारे,
कि भोए सारे संसारे मा मान।
विनती ईश्शी ....

ऊच नीच कोई भेद नहीं तुश्शे,
रंग ओर नसलारो कोई फंक नहीं तुश्शे,
ऐना झगड़े सारे मिटैयथ ईश्शे,
कि हे़रम सारे संसारे अक् समान्।
विनती इश्शी..............

मन ईश्शे शुभ पासे जो नैयथ,
कर्म योगी बनने जो शक्ति दैयथ,
हर उन्नित केऱ्नेरे सेभ ढंग हिरैंयथ,
कि केरेथ अेन ज़रा ऐहसान।
बिनती ईश्शी ....

अस् अहम् तुश्शे दास भी सारे,
पूरे केरेथ ईश्शे उद्देष्य भारे,
"माधव" ज़ोते तुस् व्यापक अथ सारे,
कि जल्दी भोए आतम् ज्ञान।
विनती ईश्शी ....

बिनती—प्रार्थना, ईश्शी—हमारी, दैयथ—दीजिए, शुन्थ—सुनिए, तुस—आप, बत—रास्ता, खरी—अच्छी, भोए—हो, मिटैयथ—मिटाइये, हेर्‌थ—देखें, सिधी बत—नेक रास्ता या सुझथ, तुश्शे—आपके, नादान्—कम समझ, मान—मान, पासे—ओर, जो—को, भारे—बड़े बड़े।

समाप्त